www.goatwala.com

Ekta Agronomic & Livestock

बकरी पालन एक परिचय :– पशुपालन के अन्तर्गत बकरी की भुमिका अति महत्वपुर्ण हैं। क्योंकि लघु व सीमान्त कृषक, भुमिहीन व साधन विहीन ग्रामीण इस उद्यम से जुडे हैं। बकरी पालन एक ऐसा व्यवसाय हैं जो विशेष रूप से अनउपजाउ जमीन एवं कम वर्षा वाले क्षेत्रों में बकरी व्यवसाय भुमिहीन, सीमान्त व लघु कृषकों के लिए समान रूप से लाभकारी हैं। इससे लगातार आय एवं लाभकारी रोजगार कृषक परिवारों को मिलता रहता हैं। बकरी कों लाभकारी रूप से कम खर्चे में सघन एवं अत्यंत विचरण पध्दति के अन्तर्गत पाला जा सकता हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी ने आज से बहुत पहले बकरी के महत्व को पहचान लिया था और उन्होंने बकरी को **गरीब की गाय** का नाम दिया था।बकरी बहुत कम साधनों में पाली जा सकती हैं। कम समय में कई बच्चे देने के कारण बहुत शीघ्र ही इनकी संख्यां बढ जाती हैं परिवार में बच्चे, बूढे तथा महिलाए भी आसानी से इनकी देखरेख कर सकती हैं।छोटे से आवास में ही 20 से 25 बकरियां आसानी से रखी जा सकती हैं।इनके द्वारा प्राप्त दूध एवं मांस से एक परिवार का भरण पोषण आसानी से हो सकता हैं। वास्तव में तो पारिवारिक पोषण–सुरक्षा गाय एवं भैस से ज्यादा बकरी प्रदान करती हैं।बकरी के मांस की भारत में ही नहीं विश्व में सभी जगह मांग हैं तथा उसकी कीमत भी अच्छी मिल जाती हैं।किसानों को भी आकस्मिक धन की आवश्यकता पडने पर बकरे एवं बकरियों को किसी भी मौसम अथवा माह में बेचकर अपनी आकस्मिक आवश्यकता की पूर्ति कर सकता हैं क्योंकि इनका बाजार पूरे साल ही रहता हैं।

बकरी एक बहुद्देश्यीय पशु हैं जो भूमिहीनों, लघु व सीमान्त किसानों की अर्थ व्यवस्था तथा पोषण में बहुत महत्वपुर्ण भूमिका अदा करता हैं। हमारे देश में गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों की जनसंख्या करीब 45 करोड हैं। जिनका जीवन बहुत ही निम्न स्तर का हैं। उनका जीवन आसानी से उंचा करने के लिए बकरी पालन सर्वोत्तम उद्यम हैं। इस व्यवसाय में बहुत अधिक तकनिकी ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती हैं, लेकिन इसमें लाभ देने की अधिक क्षमता हैं। बकरी पालन एक ऐसा व्यवसाय हैं जिसको अधिकांश ग्रामीण लोग करते हैं। बकरी को उपलब्ध झाडियों और पेडों, वृक्षों पर अच्छी तरह से पाला जा सकता हैं।जहां अन्य फसल नहीं उगाई जा सकती हैं। खेती के साथ बकरी एक अतिरक्त आय के साधन के रूप में भी पाली जा सकती हैं। जहां जमीन अधिक उपजाउ नहीं होती हैं और नकदी फसलों की खेती नहीं की जा सकती हैं। वहां बकरी पालन एक उत्तम विकल्प होता हैं, क्योंकि इस पशु को सीमित चरागाह संसाधनों में भी आसानी से पाला जा सकता हैं और उपलब्ध सीमित चारा संसाधनों को उपभोग करके एक अच्छी पूंजी बन जाती हैं।इसे समय–समय पर विक्रय कर अपनी परिवारीय जरूरतों को पूरा किया जा सकता हैं। बकरी को बेचने में भी कहीं भी कोई समस्या नहीं आती हैं। यह प्राकृतिक आपदा के समय बीमा का काम करती हैं। जब सारी फसल नष्ट हो जाती हैं तब बकरी ही सहारा देती हैं। बकरी को धार्मिक रस्म तथा सामाजिक ऋण उतारने के लिए प्रयोग में लाते हैं।

सघन पध्दति द्वारा बकरी पालनः– इसे व्यवसायिक बकरी पालन के रूप में भी परिभाषित किया जाता है। इस सघन पध्दति में बकरियों के खान पान के साथ उनके रखरखाव की सम्पूर्ण व्यवस्था उनके रहने के स्थान पर ही की जाती हैं।इसे जीरो ग्रेजिंग पध्दति भी कहते हैं। चारागाहों के क्षेत्रफल तथा उनमें उपलब्ध चारे की गुणवत्ता में हो लगातार कमी के कारण वर्तमान में सघन पध्दति परंपरागत बकरी पालन का सफल विकल्प हैं।बकरी पालन की इस पध्दति द्वारा बकरियों से उनकी अनुवांशिक क्षमता के अनुसार उत्पादन लिया जाना संभव हैं। यह पध्दति उच्च व्यय, उच्च उत्पादन के सिध्दान्त पर आधारित हैं। बकरी पालन की अन्य पध्दतियों की तुलना में शरीर रक्षा हेतु आहार की अपेक्षाकृत कम आवश्यकता इस पध्दति का महत्वपूर्ण पहलु हैं।सघन पध्दति द्वारा बकरी पालन करने के लिए प्रमुख रूप से आहार, स्वास्थ्य और प्रबंधन पर ध्यान देना आवश्यक हैं।

संस्थान एक नजर में :–संस्थान Goatwala Farm (एकता एग्रोनामिक एण्ड लाईवस्टॉक) म.प्र. की बकरी पालन के क्षेत्र की एक अग्रणी इकाई हैं जहां बकरी पालन को संपुर्ण वैज्ञानिक प्रबंधन एवं नवीन तकनिकों के साथ किया जाता हैं। संस्था बकरी पालन की एक प्रजनन इकाई हैं साथ ही यहां पर बकरी पालन प्रशिक्षण का कार्य भी प्रायोगिक प्रदर्शन के साथ किया जाता हैं। संस्थान का उद्देश्य बकरी पालन के क्षेत्र में विगत वर्षों में हुए नवीन प्रयोग, अनुसंधान आदि को, छोटे खेतिहर, गरीब बकरी पालकों तक पहुचाना हैं साथ ही व्यवसायिक रूप में बकरी पालन करने के लिए युवाओं को प्रोत्साहित करना और इन्हें इससे संबंधित प्रशिक्षण प्रदान करना साथ ही बकरी पालन के क्षेत्र में पारंपरिक रूप से बकरी पालकों का विकास करना, नस्ल सुधार और जागरूकता लाना ही संस्था का लक्ष्य हैं ताकि प्रदेश व देश में बकरी पालन का विकास हो सकें।

संस्थान के संस्थापक श्री दीपक पाटीदार ने वर्ष 2000 में इन्दौर महाविद्यालय से कृषि स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद बकरी पालन के लिए केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त करके वर्ष 2001 में इस संस्थान को प्रारंभ किया। बकरी पालन के क्षेत्र में किए गए उनके सार्थक प्रयासों के लिए 2008 में केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मखदुम मथुरा द्वारा बकरी पंडित का पुरस्कार प्रदान किया गया। संस्थान के संस्थापक एवं संस्था का एक ही लक्ष्य हैं कि बकरी पालन के पारंपरिक एवं व्यवयसायिक दोनो प्रकार के क्षेत्र का विकास होना चाहिए ताकि गरीबों और उनकी बकरियों की अच्छी कीमत मिल सकें। संपूर्ण आहार प्रबंधन के लिए फार्म पर विभिन्न प्रकार के हरे चारे की फसलों को उगाया जाता हैं और काट कर खिलाया जाता हैं संस्थान एक मिश्रित कृषि, पशुपालन, चारा प्रबंधन एवं फार्म के संपुर्ण वेस्ट के पुर्नउपयोग का एक अनुठा उदाहरण हैं।

उद्देश्य :– संस्थान का लक्ष्य एक पुरानी परिकल्पना (Laboratory to land) प्रयोगशाला से जमीन तक पहुचने की सोच पर आधारित हैं। इसके अंतर्गत हम बहुत अनुसंधान कर चुके हैं और इसे एक सुनियोजित विस्तार की योजना के आधार पर इसे आम जनमानस व गरीब बकरी पालक तक पहुचाने की आवश्यकता हैं। संस्था इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए बकरी पालन में आज तक और वर्तमान में चल रहे अनुसंधानों, क्रियाकलापों, एवं नई तकनिकों को बकरी पालन से जुडे लोगों तक पहुचाने की दिशा में प्रयासरत हैं। संस्था बकरी पालन के पारंपरिक व्यवसाय और व्यवसायिक बकरी पालन एवं बकरी पालन से जुडी विभिन्न अनुसंधान संस्थाओं के बीच एक सहायक कडी के रूप में कार्यरत हैं। बकरी पालन के इस पारंपरिक व्यवसाय को व्यवसायिक पालन की दिशा में बढाने व उनका Value Addition करना ही संस्था का मुख्य लक्ष्य हैं ताकि गरीब बकरी पालकों को उनका उचित मुल्य मिल सकें। इसके लिए बकरियों का नस्ल सुधार, टीकाकरण, प्रशिक्षण, स्वच्छ रखरखाव, आहार प्रबंधन एवं उचित समय व आयु पर बिक्री आदि कई मुख्य बिन्दु हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता हैं इसके लिए संस्थान विभिन्न समाजसेवी संस्थानों, NGO, आदि के साथ मिलकर इस दिशा में प्रयासरत हैं।ताकि सभी के प्रयास से सभी का विकास संभव हो सकें।

बकरी की प्रजातियां :–

वर्तमान में प्रक्षेत्र पर तीन उन्नत भारतीयों नस्लों की बकरियों का पालन किया जाता हैं।

बकरी की नस्ल	उत्पत्ति स्थान(जिन क्षेत्रों में पाई जाती हैं)
1. जमुनापारी –	आगरा, अलीगढ, इटावा, चक्करनगर।
2. बरबरी –	मथुरा, अलीगढ
3. सिरोही –	राजस्थान (अजमेर, सीरोही, पाली आदि)

ये तीनों नस्ल की बकरियां सघन व्यवसायिक बकरी पालन की दृष्टि से उचित मानी जाती हैं एवं इन नस्लों का विकास सघन प्रणाली में बहुत अच्छा होता हैं और यह बहुत अधिक शारीरिक भार ग्रहण करने की क्षमता रखती हैं।

बकरी पालन प्रशिक्षण :– आज की ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी, पलायन व मांस की बढती मांग आदि को देखते हुए युवा कृषकों का बकरी पालन की ओर रूझान बढा हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए संस्थान द्व ारा समय समय पर बकरी पालन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं संस्थान द्वारा एक दिवसीय व तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण आयोजित किए जाते हैं। जिसमें कृषक, उद्यमी एवं विभिन्न संस्थानों, NGO आदि के प्रतिनिधी एवं व्यवसायिक व गरीब बकरी पालक आदि प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।इसके अतिरिक्त विभिन्न NGO,

SHGS के लिए भी एक दिवसीय भ्रमण प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण आयोजित किया जाता हैं।प्रशिक्षण कार्यक्रम को और अधिक प्रभावी बनने के लिए प्रशिक्षण में Power Point Presentation,और विडियो शो आदि का समावेश किया गया हैं जिससे कि बकरी पालन संबंधित जानकारियां एवं ज्ञान गरीब, कम पढे लिखे, लोगों तक भी पहुचाया जा सकें।

उर्जा के गैर पारंपरिक स्त्रोतों का उपयोग :– बकरियों की मैग्नी का उपयोग बायोगैस के लिए किया जाता हैं। इस बायोगैस का उपयोग फार्म पर रहने वाले सभी मजदुरों के खाना बनाने के लिए किया जाता हैं। साथ ही इसी बायोगैस द्वारा जनरेटर चलाकर बिजली का उत्पादन भी किया जाता हैं।

मड पम्प का उपयोग :– चुकि आज के युग में लेबर की समस्या से पशुपालन का व्यवसाय भी अ़द्युता नहीं हैं। इस समस्या से निराकरण के लिए गोबर को मिलाने एवं स्लरी आदि के स्थानानंतरण के लिए मड पम्प (कीचड पम्प) का उपयोग किया जाता हैं। इसी पम्प की सहायता से गोबर की स्लरी को सीधे खेत में सिंचाई के जल के साथ मिलाकर डाल दिया जाता हैं जिससे कि गोबर के खाद का उचित उपयोग हो सकें। साथ ही इसको डालने के लिए लेबर खर्च को भी कम किया जा सकें।

एकता डेयरी इकाई :– बकरी पालन में प्रतिदिन किसी प्रकार से आमदनी प्राप्त नहीं होती हैं और बकरियों पर चारा, दाना, मजदूर आदि का प्रतिदिन पूंजी की आवश्यकता पडती हैं इस पूंजी की पूर्ति के लिए बकरी पालन के साथ प्रतिदिन आय देने वाले एक सहायक उपक्रम की आवश्यकता महसुस होती हैं जिससे कि प्रतिदिन होने वाले खर्च को संतुलित किया जा सकें, इसके लिए 20 बकरियों के समूह पर एक गाय या भैस निश्चित रूप से रखना चाहिए जिससे कि इस प्रतिदिन के खर्च को उसका दूध बेचकर पूरा किया जा सकें।इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रक्षेत्र पर एक डेयरी इकाई भी स्थापित की गई हैं जहां पर गायों का संपुर्ण वैज्ञानिक प्रब्रंधन के द्वारा रखरखाव किया जाता हैं।

मशीन द्वारा दूध निकालना:– दूध निकालने की संपुर्ण प्रकिया यांत्रिकी (Mechanical) हैं।जिससे सबसे पहले गायों प्रेशर पंप के द्वारा नहलाया जाता हैं जिससे उनके थन पुरी तरह साफ हो जाते हैं व दुध में कोई गंदगी आने से बव जाती हैं। फिर मशीन द्वारा दुध निकाला जाता है जो पुरी जरह साफ व स्वच्छ एवं संदुषण रहित रहता हैं।

2. रबर मेट्स का उपयोग :–

क्रास ब्रीड गायों (Cross breed cows) को अच्छे रख रखाव की आवश्यकता पडती हैं जिसमें एक मुख्य बिन्दु उनके बैठने की व्यवस्था है।इसके लिए रबर के गद्दों (Rubber Mats) का किया गया हैं। जिससे उनके थनों में इन्फेक्शन व चोट आदि का खतरा कम हो जाता हैं और गायें बहुत आरामदायक महसुस करती हैं।

फार्म अपव्यव प्रबंधन (Farm waste management)

गोमुत्र, गायों का वाश गोबर आदि का उपयोग सीधे गोबर गैस में किया जाता हैं। इस गोबर वाश/स्लरी को उठाने व खेत टेंकर आदि में भरने के लिए कीचड पंप (Mud pump) का उपयोग किया जाता हैं। गोबर स्लरी का उपयोग वर्मीकम्पोस्ट, व कम्पोस्ट में किया जाता हैं।और इसके बाद बचने वाले पानी–मुत्र आदि का उपयोग सीधे पाईप द्वारा खेत में डाल दिया जाता हैं।जिससे कि पानी का पुरा उपयोग किया जा सकें।इस तरह पुरी तरह एक प्रकार से डेरी में उपयोग हाने वाली हर वस्तु को Recycle किया जाता हैं।

बायोगैस द्वारा विद्युत उत्पादन (Electricity generation) :–

यांत्रिक डेयरी फार्म पुरी तरह बिजली पर निर्भर रहता हैं दुध निकालने के समय यदि बिजली चली जाए तो बडी समस्या खडी हो जाती है इसके लिए विकल्प के तौर पर जनित्र का प्रयोग किया जाता हैं इसके लिए भी बायोगैस का उपयोग किया जाता हैं इसके लिए बायोगैस से जनरेटर चलाकर बिजली का उत्पादन भी किया जाता हैं जिससे ईधन का खर्च भी घट गया।

वर्मी कम्पोस्ट :– फार्म पर बायोगैस स्लरी का उपयोग वर्मी कम्पोस्ट व बनाने के लिए उपयोग किया जाता हैं।जिससे अच्छी गुणवत्ता वाला कम्पोस्ट मिलता है। गोबर की व मैग्नी के संतुलित उपयोग से फार्म के वेस्ट का भी अच्छा उपयोग हो जाता हैं और अच्छी गुणवत्ता का कम्पोस्ट भी प्राप्त होता हैं।

पहुच मार्ग :– संस्थान सडक मार्ग NH3 से जुडा हुआ हैं। संस्थान पर पहुचने के लिए हवाई, रेल या अन्य किसी माध्यम से म.प्र. के एक बडे व्यवसायिक केन्द्र इन्दौर पहुचना होगा।संस्थान इन्दौर से लगभग 100 Km मुम्बई की ओर धामनोद शहर के पास एक छोटे से गांव सुन्दैल में स्थित हैं। मुम्बई की ओर से आने की स्थिति में धामनोद शहर इन्दौर से 100 Km पहले स्थित हैं।

इस मुख्य मार्ग पश्चिम की ओर 6 Km पर सुन्द्रैल गांव में संस्थान स्थित हैं।

संस्थान तक पहुचने के लिए इन्दौर के सरवटे बस स्टेशन से प्रत्येक आधे घण्टे के अन्तराल पर धामनोद के लिए बस सेवा उपलब्ध हैं। साधारणतः इन्दौर से 2–2.5 घण्टे में संस्थान तक पहुचा जा सकता हैं।

विभिन्न ऋतुओं में क्षेत्र का तापमान ग्रीष्म ऋतु में 25°c-48°c ,वर्षा ऋतु में 20°c-35°c,शीत ऋतु में 10°c-26°c रहता हैं।

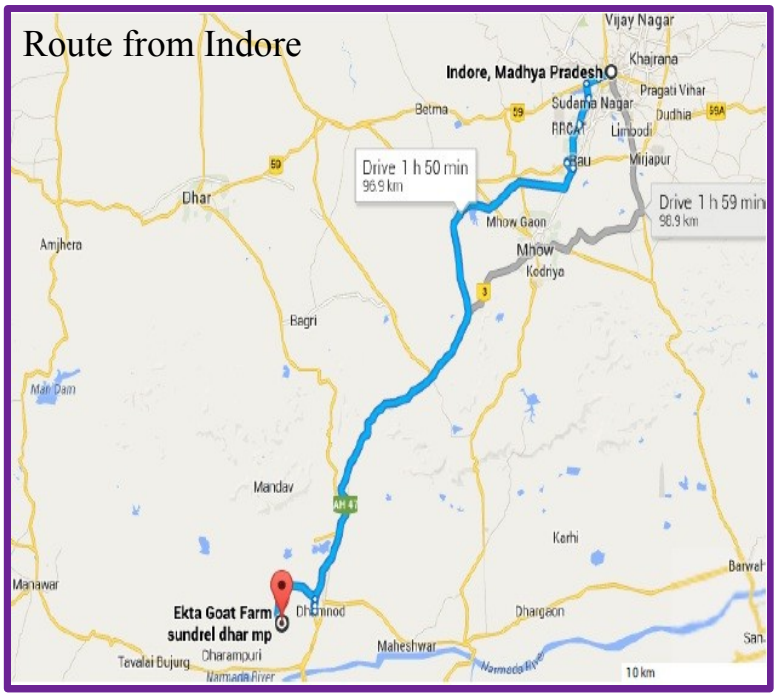

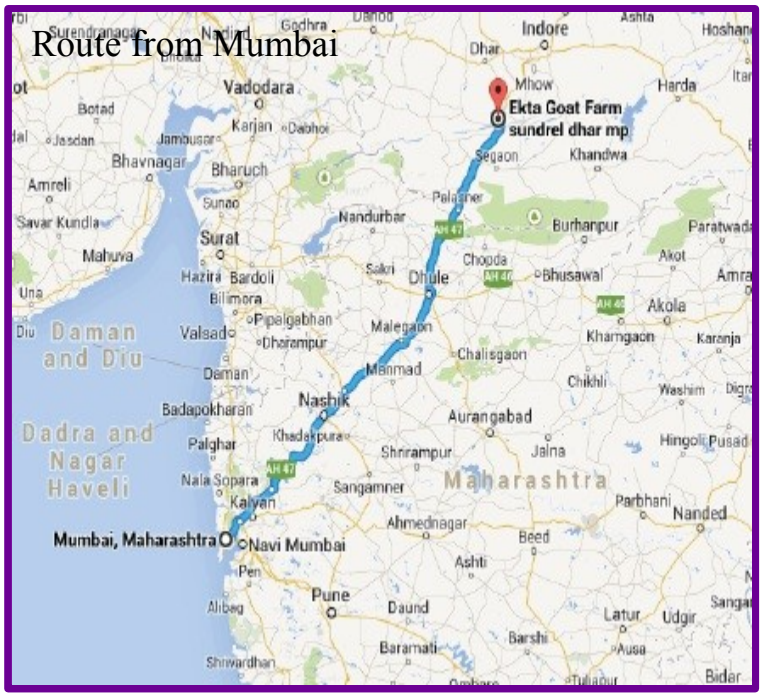

Email:- goatwala@gmail.com
Website:- www.goatwala.com

Deepak Patidar
Contact No. :- +91 94 25 04 69 43